Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2025
Impact Factor: 11.9
Subject: History

मुगलकालीन कलाः एक अध्ययन

Dr. Santosh Kumar
Assistant Professor
Department of History
S.N Sinha College (M.U),
Tekari, Gaya

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER /ARTICLE, HERE BY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT /OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE /UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION.FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR AT THE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE

साहित्य तथा धर्म की माति ही मुगल काल काल स्थापत्य काल के क्षेत्र में अमर है। इस युग की कला-कृतियों अत्यन्त गौरवशालिनी परम्परा की जीवित प्रतीक है। प्रस्तर खण्डों को साधक कलाकरों की छेनी एवं तूलिकों ने जो अमरत्व प्रदान किया है, यह हमारी अतीत गौरवगरिमा की बोलती कहानी है। ताजमहल हो अथवा मोती मस्जिद लाल किला हो अथवा दिल्ली गेट, जहाँगिरी महल हो अथवा हुमायूँ का मकबरा, फतेहपुरसीकरी हो अथवा जामा मस्जिद इनकी एक-एक ईंट हमारे ऐश्वर्य एवं चरमोत्कर्ष की जीवित गाथाएँ, विश्वकला के इतिहास में अतुलनीय एवं अपरिमेय है।'

तुर्क-अफगान काल में जिस जीवनमत कला-परम्परा को जन्म दिया गया था उसकी बरम परिणति इस युग में हुई। इसे न तो पठान कहां जा सकता है और न मुगल। बास्तविकता तो यही है कि सन् 1526 ई० के बाद जिस नयी कला एवं स्थापत्य कला का जन्म हुआ था, यह हिन्दू तथा मुस्लिम कला-परम्पराओं एवं तत्वों को एक सुखद सम्मिश्रण थी, जिसे इण्डो-मुस्लिम-कला' की संज्ञा देना कहीं अधिक श्रेयस्कर होगा।

धमन्धि औरंगजेब को छोड़कर (जिसे काव्य एवं कला से सख्त घृणा थी) भारत के प्रारंभिक सभी मुगल सम्राट कला के बड़े ही प्रेमी थे। उन्होंने अपने शानदार निर्माण कार्य द्वारा इस दिश में स्तुत्य कार्य किये हैं। बाबर का शासन काल एक तूफान की मीति था. जी आया और देखते-देखते गुजर गया। फिर भी उसने अपनी आत्मकथा में हिन्दुस्तान की भवन निर्माण पद्धति की आलोचना करते हुए निर्माण संबंधी अपनी योजना की ओर संकेत किया है। ऐसा कहा जाता है कि इस स्वप्न-द्रष्टा ने अल्बानिया के प्रसिद्ध शिल्पी सिवान के कांस्टोण्टिनोपुल स्थित शिष्यों को भारत में मस्जिद तथा अन्य भवन निर्माण के लिए बुलाया था। किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि उनका यह प्रस्ताब कार्यान्वित नहीं हो सका, कारण, वहीं से यदि शिल्पी इस देश में आते तो निश्चित रूप से यहाँ के भवनों में बैजण्टाइन शैली की स्पष्ट छाप दिखाई पड़ती।

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2025
Impact Factor: 11.9
Subject: History

किन्तु ऐसा कहीं भी देखने को नहीं मिलता। फिर भी बाबर ने अपने भवनों के निर्माण के लिए भारतीय प्रस्तर मिस्त्रियों को नियुक्त किया था। उसकी आत्म-कथा से ज्ञात होता है कि आगरा में बनने वाले मकारों में 680 आदमी प्रतिदिन काम करते थे और सिकारी, बियारा, धौलपुर, ग्वालियर तथा किउल में 1500 आदमी प्रतिदिन। दुर्भाग्यवश तीन छोटे-छोटे भवनी (पानीपत का 'काबुली बाग सम्भल की जामी मस्जिद तथा आगरा के लोदी किले की मस्जिद) को छोड़ शेष अब विस्मृति के गर्भ में विलीन हो चुके हैं।

अभागे शासक हुमायूँ के शासन काल के दो भवनों के ध्वंसाशेष मौजूद है- आगरा की मस्जिद तथा पथबाद (पंजाब) की विशाल मस्जिद, जो पर्सियन शैली के अनुकरण पर बनायी गयी थी। इस पर्सियन अथवा मंगोल शैली का व्यवहार हुमायू के शासन काल में ही सर्वप्रथम नहीं किया गया था. वरन बहमनी साम्राज्य में यह पहले से ही प्रचलित एवं लोक प्रिय थी।

यदि भाग्य ने साथ दिया होता तो हुमायूँ अपने शासन काल में और भी भवनों का निर्माण करता, किन्तु राजनीतिक स्थिति उसके विपरीत थी। कल्पना लोक में विचरण करने वाले इस बादशाह ने सबसे पहले दिल्ली में ही एक नये नगर के निर्माण की योजना बनायी थी जिसमें उस युग के बुद्धिमान पुरुष सम्राट् का संरक्षण पाकर क्रियाशील जीवन बिताते और यह नगर दीनपनाह के नाम से विश्य में आवृत होता। इसमें एक शानदार महल होता जिसकी चारों और सुन्दर बाग-बगीचे होते और इसके सौन्दर्य और यश से प्रेरित होकर दुनिया के कोने-कोने से लोग इस नगर को देखने आते। इस सम्बन्ध में जी वर्णन गिला है, उससे तो ऐसा जान पड़ता है कि इस नगर की दीवाले, चहारदिवारी तथा दरवाजे बिल्कुल तैयार हो चुके थे। दुर्भाग्यवश इस नगर की कोई निशानी तक नहीं मिलती, और वर्तमान स्थिति में यह कहना कठिन है कि यह मात्र एक योजना की अथवा इसे किसी प्रकार रूप भी दिया गया।

उपर जिन दो मस्जिदों की चर्चा की जा चुकी है, उन्हें देखने पर उस युग की भवन-निर्माण-शैली की थोड़ा आभास तो अवश्य मिल जाता है. उनमें कोई मौलिकता दृष्टिगोचर नहीं होती। हौ, उन्हें चित्रों तथा त्रिकाणात्मक शैली से विभूषित करने का प्रयास अवश्य किया गया होगा। संभवतः 'दीनपनाह' नगर भी कुछ ऐसे ही सिद्धान्त पर निर्मित हुआ होगा।

स्पष्ट है कि बाबर तथा हुमायूँ के समय में स्थापत्य कला के क्षेत्र में हुई प्रगति के जो अवशेष मिले हैं. उनमें ऐसा प्रतीत होता है कि भवन निर्माण शैली को इन दोनों सम्राटों की देन नगण्य है। इसके विपरीत उनके व्यक्तित्व और अनुभवों की अप्रत्यक्ष छाप, इस राजवंश की अग्रिम कलात्मक कृतियों पर दिखाई पड़ती है। इसमें संदेह नहीं कि बाबर का कला-ज्ञान उच्च कोटि का था जो उसके उत्तराधिकारियों को विरासत

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2025
Impact Factor: 11.9
Subject: History

के रूप में मिला था जिससे अनुप्रमाणित होकर बाद में, अनुकूल परिस्थिति पाकर उसके वशजों ने जो चमत्कारपूर्ण निर्माण करवाये, वे आज भी संसार के लिए आश्चर्यजनक है। सफची संस्कृति से हुमायूँ के सम्पर्क के कारण अधिकांश मुगल कलाकृतियों पर फारसी प्रभाव स्पष्ट है।

यद्यपि अस्थिर राजनीतिक परिस्थिति के कारण स्थापत्य कला के क्षेत्र में प्रगति नगण्य सी रहीं, फिर भी दिल्ली के आसपास जो कुछ गैर सरकारी भवनों का निर्माण हुआ था. उससे ऐसा पता चलता है कि सैयद और अफगान शासकों की शैली अब भी लोकप्रिय थी। इसका सबसे बड़ा दृष्टान्त जमाली मस्जिद है।

शेरशाह का अल्पकालीन शासन भारतीय स्थापत्य कला के इतिहास में एक सन्धि काल था। पुराना किला तथा दिल्ली स्थित राजधानी के दो दरवाजे अपेक्षाकृत परिमार्जित एवं कलात्मक कहे जा सकते हैं। सन् 1545 ई० में राजधानी की दौवालों के भीतर उसने जिस किलाइ कुहना मस्जिद का निर्माण करवाया था विलक्षण स्थापत्य कला की दृष्टि से उसका स्थान उत्तरी भारत में भवनों में काफी उच्च है। उसका मकबरा' (सासाराम) इण्डो-मुस्लिम स्थापत्य का एक सर्वोत्कृष्ट नमूना है।' इस प्रकार प्रशासन के क्षत्र में ही नहीं महान मुगल समाट अकबर का मार्ग वरन् कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में भी महान अफगान शासक ने सरल कर दिया था।

अकबर के शासन काल में स्थापत्य कला का प्रशासनीय विकास हुआ था। उसे कला के सभी अंगों का पूरा ज्ञान था और उदार सम्राट ने विभिन्न सूत्रों ने विभिन्न कलात्मक विचारों को ग्रहण किया था। इन विचारों को उनके दक्ष शिल्पियों एवं कलाकारों ने मूर्त रूप देकर उसके शासन काल को सदा के लिए अमर बना दिया। अबुल फजल ने लिखा है "He planned splendid edifices and dressed the work of his mind and heart in garment of stone and clay," फरगुसन ने फतेहपुरीसीकरी का वर्णन करते हुए लिखा है कि वास्तव में यह एक महापुरूष के मस्तिष्क का प्रतिबिम्ब है (A reflex of the mind of a great man)। इसके अतिरिक्त उसने बहुत से दुर्गा, टावर, सराय, स्कूल तालाब तथा कुएँ का भी निर्माण करवाया था। हिन्दुओं के प्रति उसकी उदारता ने उसने स्थापना कला में हिन्दू-शैलियों को भी अपनाने की प्रेरणा दी और उसके भवनों की सजावट बहुत कुछ हिन्दू तथा जैन मन्दिरों का अनुकरण मात्र है। आगरा किले का जहाँगीरी महल, फतेहपुर सीकरी के कई प्रसाद तथा लाहौर किले के प्रासाद इसके ज्वलन्त दृष्टान्त है। और तो और, दिल्ली स्थित हुमायूँ के प्रसिद्ध मकबरे में (जिसमें पर्शियन शैली अपनायीर गयी थीं भी निचले भागों के निर्माण में भारतीय शैली का अनुकरण किया गया है। फतेहपुर सीकरी के जोधाबाई का प्रासाद तथा दो अन्य आवास-गृह, दीवान-ई-आम (हिन्दू-शैली), चमत्कारपूर्ण दीवान-इ-खास (जो योजना, निर्माण एवं आभूषण की दृष्टि से पूर्ण तथा भारतीय शैली का है), संगमरमर की मस्जिद जामी मस्जिद (जिरो फरगुसन ने a romance in stone कहा है),

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2025
Impact Factor: 11.9
Subject: History

बुलन्द दरवाजा, पंचमहल (भारतीय बौद्ध विहार की शैली पर) तथा अन्य प्रसाद अकबर की अमर कला-कृतियों में हैं। इस काल के अन्य दो उल्लेखनीय निर्माण-पैलेस ऑफ फोर्टी पिलर्स, (इलाहाबाद) तथा अकबर का मकबरा (सिकन्दरा) है।

अकबर की तुलना में जहाँगीर द्वारा निर्मित प्रसादों की संख्या नगण्य है। किन्तु उसके समय के दो स्थापत्य निर्माण विलक्षण कहे जा सकते हैं। एक है अकबर का मकबरा, जिसकी चर्चा उपर की जा चुकी है और दूसरा है आगरा का इतिमादुद्दौला का मकबरा, जिसका निर्माण उ सकी पुत्री एवं जहाँगीर की पत्नी नूरजहाँ ने करवाया था। यह श्वेत संगमरमर प्रस्तरखण्डों से निर्मित है, जैसा कि उदयपुर के गोलमंडल मन्दिर में पाया जाता है (सन् 1600 ई०)। निश्चित रूप से इसका निर्माण राजपूत-शैली के आधार पर हुआ था।

शाहजहाँ शब्द के सही अर्थ में निर्माता था। आगरा, दिल्ली, लाहौर, काबुल, कन्दहार, अजमेर, कश्मीर, मुखलिसपुर, अहमदाबाद तथा अन्य स्थानों में उसने बहुत से भवनों, प्रसादों दुर्गों, उद्यानों एवं मस्जिदों का निर्माण करवाया था। इनके निर्माण में न मालूम कितने करोड़ की सम्पत्ति लगी होगी। जहाँ तक भव्यता एवं मौलिकता का प्रश्न है, अकबर की तुलना में शाहजहाँ की कृतियाँ गौण है. किन्तु प्रदर्शन तथा समृद्ध अलंकार की दृष्टि से वे उत्तम कही जा सकती है। इस दृष्टि से उसकी कृतियों को स्थापत्य आभाषण' कह सकते है। 'दीवान-इ-आम दीवान-इ-खास इसके सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है।

कला की स्वच्छता एवं भव्यता की दृष्टि से उसकी मोती मस्जिद (Peari Mosque at Agra) निस्सन्देह एक महान कृति है। इस दिशा में जामी मस्जिद' (आगरा) का भी उल्लेख किया जा सकता है। अपनी पत्नी की यादगार को अमर करने के लिए 50 लाख रूपये के खर्च से शाहजहाँ ने जिस ताजमहल का निर्माण कराया, वह वास्तव में सौन्दर्य एवं विशोलता की दृष्टि से विश्व के महान आश्चर्यों में एक है। ताजमहल के निर्माण का श्रेय उस्ताद ईसा को है, जिसे लोग अब भूल चुके है। ताजमहल के निर्माण के पीछे जिन तत्वों एवं शैलियों का सहारा लिया गया है, वे कोई नवीन नहीं थी और उनमें भारतीय शैली की छाप स्पष्ट है। फिर भारतीय कला के इतिहास में ताज-ताज है, जिसकी समानता कोई भी प्रासाद नहीं कर सकता।

शाहजहाँ द्वारा शाहदर (लाहौर) में जहाँगीर के जिस मकबरे का निर्माण किया गया था, यह भी कला के उत्कृष्ट नमूनों में एक है। इस युग की दूसरी महान कला-कृति मयूर-सिंहासन (Peacock Throne) है। सन् 1731 ई० में नादिरशाह इसे अपने साथ पर्सिया लेता चला गया, किन्तु दुर्भाग्यवश अब संसार में इसका कहीं पता नहीं चलता।

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2025
Impact Factor: 11.9
Subject: History

औरंगजेब के शारान काल में स्थापत्य कला का ह्रास होने लगा। यह प्रसादों, भवनों तथा अन्य प्रकार की कला-कृतियों के निर्माण को कतई प्रोत्साहन नहीं देता था। अतः उसके शासन काल में कुछ ही भवन बन सकें, जिनमें लाहौर की मस्जिद सर्वोपरि मानी जाती है, किन्तु कला की दृष्टि से यह नगण्य है। इसके बाद ही भारतीय कलाकारों की रचनात्मक प्रतिभा का अंत ही चला. यद्यपि इसका कुछ अवशेष 15वीं 19वीं शताब्दी तक अवध और हैदराबाद में रहा।

इसके अतिरिक्त इस युग में कुछ अन्य स्थानों पर भी कला का काफी विकास हुआ था, जिसकी संक्षिप्त चर्चा आवश्यक है। लगभग दो शताब्दियों तक विजयनगर में कला का जो विकास हुआ था. वह भारतीय कला के इतिहास में एक आश्चर्यजनक घटना मानी जा सकती है। सन् 1565 ई० तक इसके चरमोत्कर्ष का युग रहा। कला एवं स्थापत्य कला की दृष्टि से विजयनगर को आश्चर्यजनक एवं विस्मयकारी नगर कहा गया है। उसके शासक महान निर्माता थे, जिन्होंने विशाल प्रासादो तथा मन्दिरों का निर्माण करवाया था। इसके अतिरिक्त शक्तिशाली दुर्गा तथा सिंचाई एवं जल-सप्लाई कार्यों का चतुर्दिक जाल-सा बिछा हुआ था। बुका द्वितीय (सन् 1399-1406 ई०) के शासन काल में विजयनगर की किलाबन्दी के अतिरिक्त विशाल तुंगभद्रा बाँध का भी निर्माण किया गया था। साथ ही, राजधानी में पानी की सप्लाई के लिए ठोस पत्थर की चट्टानों में लगभग 15 मील तक खुदाई कर नहर की व्यवस्था की गयी थी। विजयनगर के उत्कर्ष का अन्दाज महज इसी बात से लगाया जा सकता है कि फिरोज बहमनी तथा देवराय की पुत्री के विवाह के अवसर पर विशाल जुलूस नगर के मील लम्बे रास्ते से निकला था, जिसके दोनों ओर शानदार एवं समृद्धिशाली दुकानें एक कतार से सजी हुई थी। नगर की विशाल गगनचुम्बी अङ्गालिकाएँ मानव मस्तिष्क को विस्मय विभोर कर देने वाली थी। तैमूरी राजदूत अब्दूर रज्जाक ने इसका वर्णन करते हुए लिखा है कि ऐसी इमारते आँखों ने इससे पहले कभी न देखी और कानों में संसार के किसी भी नगर में इनकी टक्कर का कभी सुना नहीं था। मेसोपोटामिया, ईरान, हेरात, रोम आदि नगरों में भी ऐसा ऐश्वर्य नहीं देखा गया।

सन 1565 ई० में विजयनगर के पतन के साथ ही इसके सभी प्रतिभाशाली कलाकार और शिल्पी जहाँ-तहाँ बिखर गए, कारण अब इन्हें संरक्षण देने वाले वे सम्राट कहीं रह गये थे? बहुत बढ़ी संख्या में दक्षिण के ये कलाकार चत्तर के सम्राटी के दरबार में पहुँचे। और संभवतः इन्हीं की प्रतिमा का यह फल था कि सोलहवीं और सत्रहवी शताब्दियों में उत्तर भारत में स्थापत्य कला के क्षेत्र में एक नवीन क्रान्ति हुई. एक नयी शैली का जन्म हुआ, जिसके फलस्वरूप यहीं भी विशाल कला-कृतियों जगमग उठी।

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2025
Impact Factor: 11.9
Subject: History

पन्द्रहवी और सोलहवीं शताब्दियों में बहमनी, गोलकुण्डा, अहमदनगर और बीजापुर में कला की विभिन्न शैलियों ने जन्म लिया, जिनमें से अधिकांश उसी हिन्द-शैली से प्रभावित थीं गोलकुण्डा की नयी राजधानी बहुत कुछ वारंगल की पुरानी हिन्दू राजधानी की ही पुनरावृत्ति थी। अहमदनगर का भी करीब-करीब यही हाल था। गुजरात और राजपूताना के साथ बीजापुर की कला भारतीय कला का ही पूर्व-रूप थी, जिसका प्रवेश अब मुगल-भारत में होता है इस प्रकार एक नयी कला-शैली का प्रादुर्भाव होता है. जिसे हिन्दू मुगल कला की संज्ञा देना विशेष उपयुक्त होगा। चार प्रधान आदिलशाही निर्माताओं में युसूफ (सन् 1490-1510 ई०) अली प्रथम (सन् 1558-80 ई०), इब्राहिम (सन् 1580-1626 ई०) तथा मुहम्मद (सन् 1626-56 ई०) के नाम आते हैं, जिनके शासन काल में आश्चर्यजनक प्रसादों एवं भवनों का निर्माण हुआ था। अली प्रथम के शासन काल में जिस गगन-महल का निर्माण हुआ था. उसके अवशेष आज भी विस्मय पैदा कर देते हैं। मुहम्मद के समाधि-भवन का निर्माण उसी समय हुआ था, जिस समय शाहजहाँ के ताज का जिसे शिल्पकला का उत्कृष्ट नमूना माना जाता है। बीजापुर के शानदार प्रासाद स्थापत्यकला की दृष्टि से तत्कालीन भारत में (रान 1490- 1660 ई०) बेजोड़ माने जाते हैं। कला की इस उत्कृष्ट शैली के प्रादुर्भाव में स्थानीय कला पर बाहरी कला के प्रभाव का भी काफी योग था। बीजापुर का प्रथम निर्माता शासक युसूफ आदिलशाह मूलतः एक तुर्की राजकुमार था, जिसका लालन-पालन जार्जिया के एक गुलाम के रूप में हुआ था। उसकी शिक्षा-दीक्षा पर्सियन पद्धति से हुई थी और अपनी नयी राजधानी के निर्माण में वह एक मराठा रानी तथा मराठा अधिकारियों से काफी प्रभावित हुआ था। इस कार्य के लिए उसने चुने हुए स्थानीय कलाकारों के अतिरिक्त पर्सिया, तुर्कीस्तान, मध्य एशिया तथा रम (कोस्टाण्टिनोपुल) से मी कलाकारों और शिल्पियों को बुलाया था। चाँद बीबी (जी जन्म से मराठा थी) के पुत्र इब्राहिम द्वितीय जिसके दरबार में काफी ब्राह्मण और मराठा अफसर थे और जो अकबर की भाँति ही अपनी हिन्दू-रूचि और मनोवृत्तियों के कारण जगदगुरु के नाम से विख्यात था उसके शासन काल में राजधानी में ईसाई कैथोलिक चर्च की स्थापना को भी प्रोत्साहन दिया गया था जिनमें से कुछ गिरजाघर आज भी उस क्षेत्र में मौजूद है। इब्राहिम के राज प्रासाद को पोर्तुगीज चित्रकारों ने ही सजाया था। उसी समय मुगल दरबार में भी यूरोपीय कला को प्रोत्साहन दिया जा रहा था और निस्सन्देह इस क्षेत्र में मुगल-राम्राट् बीजापुर का अनुकरण कर रहे थे। ठीक ताज की भाँति ही मुहम्मद के समाधि स्मारक में भी देशी एवं विदेशी कला का अद्भुत समन्वय दिखाई पडता है और संभवतः बीजापुर में जिन पाश्चात्य एवं प्राग्य कलाओं का सफल समन्वय हो पाया था. उसी से प्रेरित होकर आगरा का यह 'ताज' संसार का एक महान् आश्चर्य बन सका।

स्थापत्य कला की भांति ही मुगल-चित्रकला देशी एवं विदेशी तरत्ची का सुन्दर समन्यवय थी। 13वीं सदी में मंगोल विजेताओं के द्वारा पर्सिया में चीनी कला की एक प्रांतीय शैली को जन्म दिया गया था. जो

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2025
Impact Factor: 11.9
Subject: History

भारतीय बौद्ध ईरानी, बैक्ट्रियन तथा मंगोल तत्वों का सम्मिश्रण थी। इन मंगोलों के तैमूरी उत्तराधिकारी इसी कला को अपने साथ भारत में आये थे। इस भारतीय चीनी-पर्सियन कला का चरमोत्कर्ष अकबर के शासन काल में हुआ और इसी के फलस्वरूप गुजरात, राजपूताना, विजयनगर, बीजापुर, अहमदनगर तथा अन्य स्थानों में चित्रकला की नयी शैलियों का जन्म हुआ। धीरे-धीरे इस शैली में मंगोल तत्यों का द्वास होने लगा और भारतीय तत्वों की प्रधानता हो चली। 'यखानदान-द-तिमूरिया तथा पादशाहनामा की प्रतियों में इन विभिन्न शैलियों की चित्रकला मूर्त हो उठी है, जो पटना की खुदाबरात (ओरिएण्टल) लाइब्रेरी में अब भी सुरक्षित है।"

संभवतः चित्रकला में बाबर की रूचि थी। हुमायूँ को भी कला के लिए कमजोरी थी। अपना निष्कासन काल उसने पर्सिया में चीनी पर्सियन संगीत, काव्य तथा चित्रकला के अध्ययन में ही बिताया था। इस प्रकार वहीं पर पर्सिया के प्रमुख कलाकारों से उसका सम्पर्क स्थापित हो पाया था।

पर्सिया के सम्राद तमास्प के उदार संक्षण में वहाँ एक से एक चित्रकार दरबार में थे, जिनमें मीर सईद अली जिले The Raphael of the East' कहा गया है और ख्वाजा अब्दुरसमद प्रधान थे, जो सन् 1550 ई० में काबुल आये थे। हुमायूँ और अकबर ने उनसे चित्रककला का अध्ययन किया था। भारतीय सहायकों के साथ इन्हीं दो विदेशियों ने मुगल-शैली की बित्रकला को समुन्नत तथा समृद्ध बनाया था. जिसका चरम विकास अकबर के शासन काल में हुआ था। राजनीति के क्षेत्र में हुमायूँ ने अकबर को जहाँ अशान्ति और अराजकता दी थी, वहीं कला के क्षेत्र में अमरत्व प्रदान करने के सारे साधन भी दिये थे।

अमीर हमजा की चित्रकला जो सईद अली तथा अब्दुल समह द्वारा प्रस्तुत की गयी थी पर पर्सियन शैली का काफी प्रभाव था (सन् 1550-1560 ई०) किन्तु सन् 1562 ई० में वैष्णव संगीतज्ज्ञ तानसेन के दरबार आगमन का जो ऐतिहासिक चित्र बनाया गया था, उसमें हिन्दू तथा पर्सियन शैलियों का अद्भूत समन्वय प्रस्तुत किया गया है। अकबर की नयी राजधानी फतेहपुर सीकरी (सन् 1568-1585 ई०) की दीवालों पर इन्हीं दो शैलियों का शानदार समन्वय दिखाई पड़ता है। अकबर के दरबार में पर्सियन तथा विदेशी कलाकार बहुत कम संख्या में थे, जिनमें अब्दुस समद फरूख बेग खुसरो, कुली तथा जमशेद के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। किन्तु हिन्दू कलाकारों की संख्या काफी अधिक थी। अकबर के प्रमुख सत्रह कलाकारों में कम-से-कम 13 हिन्दू अवश्य थे। अबुलफजल ने उनका कला का लेखा-जोखा यों प्रस्तुत किया है (More than a hundred painters have become famous masters of art, This is especially true for the Hindus, their pictures surpass our conception of things; Few indeed in the whole world are found equal to them.) वे

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2025
Impact Factor: 11.9
Subject: History

पारस्परिक सहयोग से काम करते थे और रेखाचित्र अंकन, पुस्तक चित्रण तथा पशुचित्रण में बेजोड़ थे। इनमें मुख्य थे-बसवान, लाल, केतु, मुकुन्द, हरवंश तथा दसवंत।

अकबर के शासन काल में चित्रात्मक कला को काफी प्रोत्साहन दिया गया था। यद्यपि इस्लाम में जीवित स्वरूपों के चित्रण को वर्जित माना गया है. फिर भी उसके समय में ऐसे चित्रों का काफी चित्रण किया गया था। कहते हैं धर्मान्ध सुन्नी भी इन चित्रों को देखकर आद्वादित हो उठे थे।

अकबर के समय में जिस कला-शैली का आविभवि एवं विकास हुआ था. उसे जहींगीर के समय में भी सरक्षण मिला था। जहाँगीर स्वय दक्ष कला पारखी था और अपनी पसन्द के चित्रों के लिए बडी-से-बड़ी कीमत देता था। उसके दरबार में निम्नलिखित प्रसिद्ध मुसलमान कलाकार थे-हेरात का आगा रेजा और उसका पुत्र अबुल हसन् समरकन्द के मुहम्मद नादिर तथा मुहम्मद मुराद (इन विदेशी कलाकारों के बार भारत में फिर कोई दूसरा विदेशी कलाकार नहीं आया) और उस्तार मंसूर। हिन्दू-चित्रकारों में विशन दास, मनोहार तथा गोवर्द्धन प्रमुख थे।

जहांगीर की मृत्यु के साथ ही देश में मुगल-चित्रकला का द्वास प्रारम्भ हो गया। शाहजहों में अपने पिता की भांति इस कला में विशेष रूचि थी, जिसकी चर्चा उपर की जा चुकी है। अतः उसके समय में दरबार में रहने वाले चित्रकारों की संख्या में काफी द्वाप्त हो मला। शाही परिवार में अब कला को संरक्षण तथा प्रोत्साहन देने वाला एक मात्र दाराशिकोह ही रह गया था, किन्तु उसकी असमय मृत्यु ने साम्राज्य के साथ ही इस देश की कला पर जबर्दस्त आघात पहुंचाया। अब इन कलाकारों के समक्ष रोजी-रोटी की समस्या तीव्र हो बली, अत लाधार होकर इन्होंने राजपूताना तथा हिमाचल की तराई के राज्यों के सामन्तों के यहाँ नौकरी कर ली। फलस्वरूप इन राज्यों में 17वीं और 18 वीं शताब्दियों में भी चित्रकला जीवित रही। किन्तु अधिकांश चित्रकारों को बाजारों में अब स्टूडियों खोलकर चित्र बेचने का पेशा अख्तियार करना पड़ा। तात्पर्य यह कि शानदार, गौरवशालिनी मुगल-कला-परम्परा अब असहाय हो दम तोड़ने लग गयी थी।

औरंगजेब का शासन काल दृष्टि से शून्य है। उसने इस मृतप्राय कला को आखिरी धक्का दिया। यह कला और काव्य का चोर विरोध था और बीजापुर के असार महल की चित्रकला को उसने चूने से पोतवा दिया था। फिर भी उसके निजी चित्र काफी पाये जाते हैं।

औरंगजेब के पश्चात ये मुगल चित्रकार लखनऊ पटना, मुर्शिदाबाद, हैदाराबाद तथा मैसूर के दरबारों में चले गये और अपनी पुरानी चित्र परम्परा का निर्वाह किया, यद्यपि अब ववह संरक्षण कहाँ रह गया था। फिर मी राजपूताना शैली, काँगड़ा शैली टेहरी गढ़वाल शैली, सिक्ख शैली आदि शैली का विभिन्न शाखाएँ थी।'

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2025
Impact Factor: 11.9
Subject: History

महान् मुगल सम्राटों के साथ बीजापुर के आदिलशाही सुलतान तथा मालवा के बाजबहादुर जैसे भारतीय शासक संगीत कला के बड़े ही प्रेमी थे। अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ के शासन काल में संगीतज्ञों को पर्याप्त संरक्षण तथा सम्मान दिया जाता था। अबुलफजल के अनुसार अकबर के दरबार में 36 उच्च कोटि के संगीतज्ञ थे, जिनमें तानसेन सर्वाधिक लब्ध प्रतिष्ठ था। अबुलफजल के अनुसार (A singer like him has not been in India for the last thousand years.) इसके बाद मालवा महान मुगल सम्राटों के साथ बीजापुर के आदिलशाही सुलतान तथा मालवा के बाजबहादुर जैसे भारतीय शासक संगीत कला के बड़े ही प्रेमी थे। अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ के शासन काल में संगीतज्ञों को पर्याप्त संरक्षण तथा सम्मान दिया जाता था। अबुलफजल के अनुसार अकबर के दरबार में 36 उच्च कोटि के संगीतज्ञ थे, जिनमें तानसेन सर्वाधिक लब्ध प्रतिष्ठ था। अबुलफजल के अनुसार (A singer like him has not been in India for the last thousand years.) इसके बाद मालवा का बाजबहादुर था, जिसे (The most accomplished man of his day in music and Hindi song.) कहा गया है। औरंगजेब ने संगीत पर प्रतिबन्ध लगाकर इस परम्परा को समाप्त कर डाला।

संदर्भ-

1. डॉ० रामनाथ-मध्यकालीन भारतीय कलाएँ एवं उनका विकास पृ०-54
2. श्रीवास्तव, डॉ०ए०एलः मध्यकालीन भारतीय संस्कृति पृष्ठ-100-161
3. श्रीवास्तव, डॉ०ए०एल-मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, पृष्ठ-164, 166, 173, 200
4. श्रीवास्तव, डॉ०ए०एल-मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, पृ०-201, 213-214, 218
5. शेरवानी, डॉ०एच० के- कल्बर ट्रेंडस इन मेडिवल इंडिया, पृष्ठ- 46
6. श्रीवास्तव, डॉ०ए०एल-मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, पृ०- 221, 229
7. शर्मा, आर०एस०- भारत में मुस्लिम शासन का इतिहास, पृ० 508

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2025
Impact Factor: 11.9
Subject: History

Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, here by, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website /amendments /updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct, I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and hentriacontane is genuinely mine. If any issue arises related to Plagiarism/ Guide Name/ Educational Qualification /Designation /Address of my university/ college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission /Submission /Copyright /Patent /Submission for any higher degree or Job/Primary Data/Secondary Data Issues. I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the database due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Andhra/Driving License/Any Identity Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper maybe rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds Any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper maybe removed from the website or the watermark of remark/actuality maybe mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me.

डॉ० संतोष कुमार

******